3 ग्राम संगठन और पंचायत

क्या ग्राम संगठन की पंचायत में भी कोई भूमिका है?

- यह तो हम सभी जानते हैं कि संगठन की महिलायें या उनके परिवारों में से ही कई लोग पंचायत में पंच या सरपंच या उपसरपंच होगे। पंचायत के खर्चों को समझना, उसके कामों को समझना, उसके संसाधन को समझना गांव में सभी की जिम्मेदारी है, खासतौर से चुने हुये पंचो और पदाधिकारियों की। संगठन की जो महिलायें पंचायत की सदस्य हैं उन्हें यह काम जिम्मेदारी से करना चाहिये।
- गांव के लोग मिलकर पंचायत के साथ योजना बनाते हैं इसलिये पंचायत की योजना बनाने में यानि पंचायत कौन -कौन से काम, कितने पैसों में कब करेगी, यह तय करने में ग्राम संगठन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- पंचायत को अपना काम ठीक से करने के लिये लोगों के सहयोग की जरूरत होती है, जैसे गांव में सफाई बनी रहे, लोग शौचालय का उपयोग करें, पानी की बर्बादी न हो, जानवरों को ठीक जगह पर

बांधा जाये इत्यादि। इन नियमों को गांव में चलाने के लिये ग्राम संगठन पंचायत के साथ लगातार बातचीत कर सकता है, और सहयोग भी कर सकता है। साथ ही ही वह नियमों को बनाने में भी पंचायत का सहयोग कर सकता है।

- अधिकतर पंचायत के चुने हुये प्रतिनिधियों को अपनी समस्याओं के संबंध में अलग-अलग विभागों से सहयोग की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर पानी की समस्या से निपटने के लिये पीएचईडी विभाग द्वारा पाईपलाइन विस्तार, या फिर स्कूल में बाउंड्रीबाल निर्माण के लिये शिक्षा विभाग से सहयोग। सरपंच या सचिव अकेले विभागों के आगे कमजोर पड़ जाते हैं। यदि ग्राम संगठनों की सामूहिक ताकत पंचायत को मिल जाये, तो विभागों के आगे पंचायत का पक्ष मजबूत हो जाता है। इसलिये ग्राम संगठन पंचायत के कामों को आगे बढ़ाने में भी बहुत मददगार हो सकता है।
- यही नहीं ग्राम संगठन, पंचायत के निर्णयों पर भी दबाव बना सकते हैं और पंचायत के कामों की निगरानी भी कर सकते हैं।
- ग्राम संगठन के द्वारा ग्राम पंचायत की आमदनी बढ़ाने के लिये नये सुझाव दिये जा सकते है। टेक्स की ठीक वसूली, जल कर से पानी की व्यवस्था में ध्यान दे सकती है।
- ग्राम संगठन ग्राम पंचायत के आम-व्यय पर निगरानी कर सकते है जिससे सार्वजनिक धन का सही उपयोग हो सके। ग्राम संगठन सामाजिक अंकेक्षण में भी अपनी भागीदारी निभा सकते है।